रात्रीक्लास ओमशांति 22.10.67

बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। फीलिंग भी उन्हों को आती है जो इस आदि सनातन देवी देवता धर्म के हैं। मैसेज सबको देना है। पहले तो यह समझाओ कि तुम सब ब्रदर्स हो। कोई आते हैं कहते हैं चीनी, हिंदू भाई2 ;परंतु अर्थ नहीं समझते कि हम आत्माएं सब भाई2 हैं। तुम तो अच्छी रीति जानते हो। तुम जो कुछ कहते हो समझ कर। वो हैं बेसमझ। हम सब भाई2 कैसे हैं। कोई समझते नहीं। हम सब आत्माओं का बाप एक है। बाप से जरूर वर्सा मिलता होगा। यह तो नैचुरल कैलेमिटीज है। प्रदर्शनी व म्यूजियम में यह समझाना कठिन होता है। वो तो एकांत में समझाना पड़े। पहली बात है कि बाप का परिचय देना है। रचता और रचना को कोई नहीं जानते। यह भी बरोबर है। तुम बच्चों को भी बाप ने परिचय दिया है। कितने लाखों आये उनसे तुम कितने थोड़े निकले हो। प्रदर्शनी से भी कोई निकलते हैं इसमें भी खयाल न करना चाहिए। ड्रामा अनुसार जो होना है फिकर की बात नहीं। दिल को रंज नहीं होना चाहिए। बापदादा दोनों बैठे हैं। ड्रामा के पटे पर ही रहना है। बाबा लिख देते है। कल्प पहले भी हुआ था। कोई रूठते हैं, कोई छी2 बन बैठते हैं। कोई हंगामा करते हैं। समाचार सुना। फिर समझते हैं ड्रामाअनुसार हुआ। बच्चों को पुरुषार्थ करना है। बाप आये ही हैं पुरुषार्थ कराने। दिल में यह बात है जिस कारण ये फिकर रहते हैं। ड्रामा अनुसार कोई अपन में नहीं बनती है। माया विघ्न तो डालगी न। आगे चल ठीक समझ जावेंगे। बाप अपना अनुभव सुनाते हैं। सारा दिन क्या करते हैं। अंदर में सदैव खुश रहना चाहिए। अब सेंटर भी बड़ा खोलते हैं। बड़ा होगा तो बड़े आदमी आयेंगे। बाप है गरीब निवाज़ ;परंतु जब बड़े का आवाज हो...तो छोटे भी आ जायें। इसलिए तुम बड़े2 का ओपनिंग आदि दिखाते हो। बहुत हों तब आवाज भी हो। बाबा कहते भी हैं साहुकार इतना उठावेंगे नहीं। बाप कहते भी हैं प्रदर्शनी खोलते हो तो बाप जो कहते हैं वह मानना चाहिए ना। प्रूफ आदि जो बनवाते हो उनकी कापी निकलवाय एलबम बनवाना चाहिए। राजाई स्थापन में मेहनत लगती है। प्रजा ढेर बन रही है। कोटों में कोउ ही निकलते हैं। बाप है ही गरीब निवाज़। यहां के करोड़पति समझते हैं हमारे लिए यहां ही स्वर्ग है। बहुत पैसे वाले बन गए हैं। गरीब मातायें, अबलायें हैं ना। कैसे2 आते हैं बात मत पूछो। बाबा जानते हैं यह तो बहुत धनवान बननी है। 8आना भी भेज देते हैं। बस, बाबा आपकी याद कायम रहे। यह कृपा करो। बाबा कृपा तो कर नहीं सकते। मेहनत करो। तुम्हारा बाप है ना। शिवबाबा के तुम आत्माएं बच्चे हो। बाप सिर्फ कहते हैं मुझे याद करो तो तुम विश्व के मालिक बन जावेंगे। प्रजा भी विश्व के मालिक हैं ना। अमेरिका के रहवासी कितने खुश रहते हैं। अपने2 देश के मालिक हर एक अपन को समझते हैं। तुम समझते हो अभी हम सबसे बड़े से बड़े बनते हैं। स्टार्स आदि में जाते हैं यह तो कुछ भी नहीं पाते। सब खोते ही हैं। तुम बच्चों को तो अथाह खुशी रहनी चाहिए। कमाई तो हमारी है। हम सबसे धनवान रहेंगे। ल.ना. का चित्र सामने कर दो। हम भारत की सेवा करते हैं। श्रीमत पर राजयोग सिखलाते हैं। बाप कहते हैं मामेकम् याद करो तो तुम सतोप्रधान दुनियां के मालिक बन जावेंगे। विनाश सामने खड़ा है। हम अपना राजभाग पाय रहे हैं। हमारी जैसी कमाई कोई कर न सके। तुम जानते हो मनुष्य जो कुछ करते बर्थ नॉट अपेनी बनने लिए। हम बाबा से विश्व के मालिक बनते हैं। यह हमको सारी दुनियां का सफाया करके देते हैं। बाकी ऐसे नहीं शंकर किसको बोलते हैं यह करो। ड्रामा बना हुआ है। सब सफाया पूरी हो जावेगी। बाकी हम अपनी बादशाही में रहेंगे। तुम बच्चों को खुशी बेहद की होनी चाहिए। दिलचस्पी से इस सर्विस में लग जाना चाहिए। सर्विस ही सर्विस। हम सबके सच्चे मित्र हैं ईश्वर, सबका मित्र है तब तो उनको बुलाते हैं ना। बाबा कहते हैं तुम बच्चे हो। तुम हर 5000वर्ष बाद भारत को ऐसा बनाते हो। फिक्र की कोई बात ही नहीं। कितनी भी बातें सुनता हूं। (फिर) भी कहता हूं इनकी तकदीर में माया के विघ्न हैं। अच्छे2 बच्चों पर माया के विघ्न आते हैं। आस्ते2 अपन

को विघ्न से दूर करते रहेंगे। बाबा जानते हैं इस समय तक जो पास हुआ बिल्कुल अच्छा। आगे के लिए पुरुषार्थ करते रहते हैं। अच्छा ही होने का है कल्प2। समझाते हैं कोई हो जो युक्ति से काम करे जिसमें पैसे आदि का नुकसान न हो। बच्चों के पैसे हैं। अच्छा सेंटर खुल जावेगा। बड़े कैपिटल में घेरा डाला तो आवाज हो जावेगा। रेख–देख कर कायदे में लाये समाचार देना है। बाबा डायरैक्शन देंगे। सब जाकर मदद करो, छुट्टी ले लो। 15/20 दिन तो लग जाओ सर्विस में। आप ही सर्विस में लगेंगे। बैठ गया तो नाम बदनाम कर देंगे। थोड़े दिन जिस्मानी सर्विस से छुट्टी कर लो। अच्छा सेंटर खोलते हैं कोई अच्छे एक/दो बीमार हो जाते हैं। बाबा को थोड़ा ही फिकर होगा। कोई न कोई को भेज देंगे ;परंतु सब हो....सकता है। मुख्य चित्र है ही यह (ल.ना.) हम भारत को फिर से बना रहे हैं। हम भारत को फिर से बना रहे हैं। जो कुछ समय बीतता है नथिंग न्यू। खुशी रहती है। ऐसे2 बच्चे कब झुटका न खावेंगे। बाबा इशारा लिख देंगे। कोई समझ जाते हैं। कोई पर ग्राहचारी बैठ जाती है। बाबा समझाते हैं बच्चे कैरेक्टर भी सुधारनी है। आंखें हैं धोखा देने वाली। कब भी तुम बच्चे फिकर में न रहो। फिर ऐसा कर्तव्य बेढंगा न करो जो खुद को भी लज्जा आये। बाप को भी घृणा आये। तुम्हारी आंखें कितना क्रिमिनल काम करती हैं। इन आंखों से जो कुछ देखते हो समझो यह है नहीं। हमको तो जाना है। वैराग आना ही न चाहिए। तीसरा नेत्र तो मिला है। देखते हुए कुछ भी है नहीं। माया फंसाने की बहुत कोशिश करेगी। 8/9वर्ष भी पवित्र रह गिर पड़ते हैं। माया काला मुंह कर देती है। माया एकदम शूट कर देती है। तुम बच्चों को बुद्धि का योग लगाना है एकदम बाबा के साथ और घर की तरफ। बाबा के पास जल्दी जावेंगे तो विकर्म विनाश हो जावेंगे। फिर जल्दी हम आय माला का दाना बनेंगे। बच्चों को समय बहुत मिलता है। प्रैक्टिस को बढ़ाना है। जितना बाहर का झंझट कम हो उतना ही अच्छा है। पैसा क्या (करेंगे)?जास्ती बिखेरे में न जाना है। पत्र–पोत्रे तो खावेंगे नहीं। तुम्हारे पास पैसे बहुत हैं। बैंक में जमा कर दो, रखेंगे। तो तुम बच्चों को इस रुहानी धंधे में लग जाना चाहिए। तीर लगाने की कोशिश करो। हम तो बाप को ही याद करते हैं। हम 21जन्म लिए विश्व के मालिक बनते हैं। अटेंशन कम देंगे तो बड़ा घाटा पड़ जावेगा। पैसे क्या करेंगे। तुमको पहले2 बाण मारना है अपन को आत्मा समझो, बाप को याद करो। यह गुप्त बहुत है जिसको भी पता नहीं सिवाय तुम्हारे। इसमें बहुत क्लीयर है। याद की यात्रा में मग्न है। सबसे जास्ती आंखें धोखा देती हैं। बहुत खराब करती हैं। हर एक अपने दिल से पूछे तुम ही बाप से वर्सा ले रहे हो। बाकी तो मनुष्य बिचारे हैं। ड्रामा बना हुआ है। भगती पूरी होती है। तब बाप कहते हैं मैं आता हूं। बुलाते भी हो हे पतित–पावन आओ। पतित दुनियां ,पतित शरीर में बुलाते हैं। तो बाप ही आय अपना परिचय देते हैं। इस सृष्टि चक्र में जो मनुष्य पार्टधारी है वो अपनी रचयिता बाप को और चक्र के आदि,मध्य,अंत को नहीं जानते तो वो एडीटर है। बर्थ नॉट अपेनी है। खूब अच्छी रीति ..... भल पड़े। सब जगह.....हो। सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है आदि,मध्य,अंत को नहीं जानते। तुम्हारे सिवाय कोई बताय न सकेंगे। आर्फन्स बन जाते हैं। बाप को नहीं जानते वा जो बाप को सर्वव्यापी कह देते नम्बरवन नास्तिक है। तुम समझाय सकते हो ऐसी2 बातें भूल जाते हैं। इस समय के मनुष्य मात्र नास्तिक हैं। सतयुग में हैं ही आस्तिक। धन की कोई बात नहीं। बच्चों को बड़े हुल्लास में रहना चाहिए। बैज पर समझाओ। अभी तो नर्क है। तुम बाप को याद करो तो स्वर्ग के मालिक बन जावेंगे। स्वर्ग कोई कम है क्या?सर्विस की ही धुन लग रही है। बिल्कुल सिम्पल रहना चाहिए। समझते हो हम बनवास में बैठे हैं। यह है बेहद का बनवास। दो बाप अब ही मिलते हैं। ससुर घर भेजने लिए। अच्छा, बाप सारे विश्व के आदि,मध्य,अंत का राज़ समझाते हैं जिसका कोई को पता नहीं है। इस सृष्टि के डेकोरेशन का कोई को पता नहीं है। इसे समझाने में टाइम लगता है। जब तक बाप को न समझा है तो वे तो .....कुछ न समझेंगे। मुफ्त संशय उठते रहेंगे। ऐसे क्यों शास्त्र तो ऐसे कहते हैं। गुरू लोग भी तो शास्त्र पढ़े हुए है ना। अच्छा, मीठे2 सिकीलधे बच्चों को यादप्यार। गुडनाइट।